दैनिक भास्कर
11/7/14

मेमनों की जरूरत पूरी करेगा मिल्क रिफ्लेसर

अपनाई जा रही है वैज्ञानिक तकनीक, बोतल से पिलाया जा रहा है दूध

महेश शर्मा | मालपुरा

अनुसंधानित तकनीक से वैज्ञानिकों द्वारा एक भेड़ से चार-चार मेमने पैदा कराने के बाद भेड़ के दूध की ज्यादा आवश्यकता होने पर वैज्ञानिकों ने शोध कर विभिन्न रसायनों से मिल्क रिफ्लेसर नामक दूध तैयार किया है। इस दूध को बोतलों से मेमनों को पिला कर उनका शारीरिक विकास किया जा रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार इस दूध को पिलाने से भेड़पालक का मेमना कम उम्र में 18 किलो वजन तक विकसित हो सकेगा।

मालपुरा. मिल्क रिप्रेसर विधि से बना दूध बोतल से मेमनों को पिलाता किसान।

अकाल के समय नहीं होगी परेशानी

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के निदेशक डॉ. एस.एम.के. नकवी ने बताया है कि पहले कृत्रिम गर्भाधान से एक साल में चार बार बच्चे प्राप्त करने की विधि विकसित की गई थी। अब एक भेड़ से पैदा होने वाले चार मेमनों को पर्याप्त दूध नहीं मिलने पर समस्या खड़ी हो गई। एक ही भेड़ से पर्याप्त दूध नहीं मिलने पर मेमने बीमार होकर मरने लगे। इस पर संस्थानिक वैज्ञानिकों ने इन्हें जीवित रखने के लिए लंबे अनुसंधान के बाद मिल्क रिप्लेसर नामक दूध तैयार किया। इससे ज्यादा पैदा होने वाले मेमनों को एक समान रूप से विकसित किया जा रहा है। हालांकि इसे बोतल से पिलाना पड़ता है। संस्थान निदेशक ने बताया कि यह दूध अकाल के दौरान चारा-पानी की कमी के चलते भेड़ों में आने वाली दूध की कमी के बावजूद मेमनों को जीवित व विकसित करने में अत्यंत लाभदायी रहेगा।